1995 - 96

प्रवाहिनी

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
आपो हि ष्ठा मयोभुव

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
रुड़की-247 667

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE-247667 (U.P.)

वार्षिक पत्रिका

1995 - 96

प्रवाहिनी

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान

रुड़की-247 667

सम्पादक मण्डल

डा. भूपेन्द्र सोनी, वैज्ञानिक "ई"
मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञानिक "सी"
मोहम्मद फुरकानुल्लाह, "वरिष्ठ तकनीकी सहायक"

टंकण

बृजेश कुमार, "आशुलिपिक"
महेन्द्र सिंह, "आशुलिपिक (हिन्दी)"

****

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

डा. सौभाग्य मल सेठ
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की

संदेश

यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी हिन्दी वार्षिक पत्रिका "प्रवाहिनी" का प्रकाशन कर रहा है।

संस्थान ने प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी कार्य भी हिन्दी में किये जाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया है तथा उपलब्धियां प्राप्त की हैं। संस्थान की विभिन्न गतिविधियों में हिन्दी भाषा को सहज रुप से माध्यम बनाया जाता है। "प्रवाहिनी" का प्रकाशन इस दिशा में एक उत्तम प्रयास है। संस्थान के सभी सदस्यों में छिपी साहित्यिक प्रतिभा को निखारने तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग में यह पत्रिका सहायक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

डा. दिव्या के असामयिक निधन से संस्थान के हिन्दी कार्यक्रमों को भारी क्षति पहुंची है। उन के हिन्दी के प्रयोग एवं उत्थान के लिए दिये गये योगदान को यह संस्थान सदा याद रखेगा।

मैं इस प्रकाशन की सफलता की शुभकामनाएं करता हूं।

सौभाग्य सेठ
(सौभाग्य मल सेठ)

हिन्दी सप्ताह समारोह
9 सितम्बर, 1996

सम्पादकीय

नवीन रचनाओं पर आधारित राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान की हिन्दी वार्षिक पत्रिका "प्रवाहिनी" का तृतीय खण्ड आपके सामने है।

आज रेडियो, टेलीविजन आदि ने हमारे जीवन पर विशेष रुप से प्रभाव डाला है। सूचना तंत्र के बढ़ते आयामों से दुनिया सिमटकर बहुत छोटी हो गई है। बड़े - बड़े लेख प्रकाशित करने वाली पत्रिकाओं के ओर सामान्य पाठकों की रुचि कम दिखाई पड़ती है। आधुनिक तकनीकी के विकास एवं प्रयोग से पत्रिकाओं के प्रकाशन में एक नया मोड़ आया है। आज पाठकों को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जो न केवल उनका मनोरंजन करे बल्कि साथ ही साथ कम समय में ज्ञानवर्धक जानकारी भी प्रस्तुत करे। गौरव की बात है कि हमारे संस्थान में न केवल जलविज्ञान के क्षेत्र में ही, बल्कि अन्य साहित्यिक क्षेत्रों में भी बहुत सी प्रतिभाऐं मौजूद हैं। इन्हीं प्रतिभाओं की मूल रचनाओं का संकलन प्रवाहिनी के इस खण्ड में आपके सम्मुख है।

इस प्रकाशन को तैयार करते हुए पल-पल पर डा. दिव्या की बहुत याद आयी। सम्पादक मण्डल हिन्दी के प्रति समर्पित उनकी निष्ठा, मेहनत व लगन को सादर नमन करता है। उनके द्वारा रिक्त किये गये स्थान को भर पाना असम्भव है।

अन्त में सम्पादक मण्डल उन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है जिन्होंने अपने परिश्रम एवं प्रतिभा से प्रवाहिनी के इस प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया। हम अपने निदेशक महोदय के भी आभारी है जिनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से ही इस पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

सम्पादक मण्डल

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE-247667 (U.P.)

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
1.	हम और हिन्दी - डा. आशा कपूर	1
2.	जो आज नहीं है पर भुलाये नहीं जा सकते	3
3.	अपने शहर के लोग - महेन्द्र सिंह	4
4.	जलविज्ञान के क्षेत्र में एक राष्ट्रीय सूचना तंत्र की आवश्यकता - मोहम्मद फुरकानुल्लाह	5
5.	बीस फुट लम्बा सांप - कैलाश चन्द्र कथेरिया	7
6.	अपने आपको पहचानें - डा. भीष्म कुमार	8
7.	देर कर दी - गुरदीप सिंह दुआ	10
8.	जलविज्ञान से सम्बन्धित मध्य प्रदेश का संक्षिप्त परिचय - राजेश कुमार नेमा	11
9.	प्रियतम - अनिल कुमार लोहानी	16
10	पानः निराली शान - पंकज कुमार गर्ग	17
11.	मेरा भारत - नुसरत इजहार सिद्दिकी	18
12.	जल संसाधनों का समुचित प्रबंधनः आज की आवश्यकता - राजेश्वर मेहरोत्रा	19
13.	कुर्बानी - सुरेन्द्र कुमार कर्णवाल	24
14.	मानव जीवन एवं उसकी सफलता - एस. एल. श्रीवास्तव	25
15.	पत्थर - अंजु चौधरी	26
16.	सूचना क्रान्तिः परिचय एवं जलविज्ञानीय क्षेत्र में इसका योगदान - अशोक कुमार द्विवेदी	27

			पृष्ठ संख्या
17.	मरुस्थल	- हंसी	31
18.	ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली	- तूहीराम हंस	32
19.	मेरी अन्तिम यात्रा	- मनमोहन कुमार गोयल	35
20.	जल पीने से कैंसर की संभावना	- उमेश कुमार सिंह	37
21.	बताओ तो जानें	- मनोज कुमार सागर	38

***